CCL Class Chapter Lesson

Class 8th to 12th

CBSE, HBSE and Other State Boards Where NCERT Book is Followed

NCERT All Book Chapters Solution

NCERT Question Answer

NCERT Important Questions for Exam

Download More PDF's

Subscribe

Subscribe Our Youtube Channel for All Updates Related to Your Subject

नए और अप्र याशित विषयों पर लेखन

क ा वीं और वीं हिंदी

अभिव्यक्ति और मा म

अ ास प्रश्न उत्तर

प्रश्न अ ूरे वाक्यों को अपने श दों में पूरा कीजिए

. हम नया सोचने लिखने का प्रयास नहीं करते क्योंकि ..
. लि खत अभिव्यक्ति की मता का विकास नहीं होता क्योंकि ..
. हमें विचार प्रवाह को थोड़ा नियं त रखना पड़ता है क्योंकि .
4. लेखन के लिए पहले उसकी परेखा होनी चाहिए क्योंकि
. लेखन में 'मैं' शैली का प्रयोग होता है क्योंकि ..

उत्तर

. हम नया सोचने लिखने का प्रयास नहीं करते क्योंकि हमें आ निर्भर होकर लि खत प में स्वयं को अभिव्यक्ति करने का अ ास नहीं होता है।
. लि खत अभिव्यक्ति की मता का विकास नहीं होता क्योंकि हम कुछ नया सोचने लिखने का प्रयास करने के ान पर किसी विषय पर पहले से उपल साम ी पर निर्भर हो जाते हैं।
. हमें विचार प्रवाह को थोड़ा नियं त रखना पड़ता है क्योंकि विचारों को नियं त करने से ही हम जिस विषय पर लिखने जा रहे हैं उसका विवेचन उचित प से कर सकेंगे।
4. लेखन के लिए पहले उसकी परेखा होनी चाहिए क्योंकि जब तक यह नहीं होगा कि हमने क्या और कैसे लिखना है हम अपने विषय को सुसंबं और सुसंगत प से प्रस्तुत नहीं कर सकते।
. लेख में 'मैं' शैली का प्रयोग होता है क्योंकि लेख में व्यक्त विचार लेखक के अपने होते हैं और लेख पर लेखक के अपने व्यक्ति व की छाप होती है।

प्रश्न नि लि खत विषयों पर से श दों में लेख लि खए

1. झरोखे से बाहर
2. सावन की पहली झड़ी
3. इ हान के दिन
4. दीया और तूफ़ान
5. मेरे मोह े का च राहा
6. मेरे प्रय टाइम पास
7. एक कामकाजी औरत की शाम।

उत्तर . झरोखे से बाहर

झरोखा है-भीतर से बाहर की ओर झांकने का मा म और बाहर से भीतर देखने का रास्ता। हमारी आँखें भी तो झरोखा ही हैं-मन-मस्ति को संसार से और संसार को मन-मस्ति से जोड़ने का। मन पी झरोखे से किसी भक्त को संसार के कण-कण में बसने वाले ई र के दर्शन होते हैं तो मन पी झरोखे से ही किसी डाकू-लुटेरे को किसी नी-सेठ की न-संपत्ति दिखाई देती है जिसे लूटने के प्रय न में वह ह या जैसा जघन्य कार्य करने में तनिक नहीं झझकता। झरोखा स्वयं कितना छोटा-सा होता है पर उसके पार बसने वाला संसार कितना व्यापक है जिसे देख तन मन की भूख जाग जाती है और कभी-कभी शांत भी हो जाती है। किसी पर्वतीय ल पर किसी घर के झरोखे से गगन चुंबी पर्वत मालाएँ, ँचे- ँचे पेड़, गहरी-हरी घाटियां, डरावनी खाइयां यदि पर्यटकों को अपनी ओर खींचती हैं तो दूर-दूर तक घास चरती भेड़-बक रयां, बांसुरी बजाते चरवाहे, पीठ पर लंबे टोकरे बां कर इ र-उ र जाते सुंदर पहाड़ी युवक-युवतियाँ मन को मोह लेते हैं। राज ानी महलों के झरोखों से दूर-दूर फैले रेत के टीले कछ अलग ही रंग दिखाते हैं। गाँवों में झोंपड़ों के झरोखों के बाहर यदि हरे-भरे खेत लहलहाते दिखाई देते हैं तो कूडे के ँचे- ँचे ेर भी नाक पर हाथ रखने को मजबूर कर देते हैं ।

झरोखे कमरों को हवा ही नहीं देते बि भीतर से ही बाहर के दर्शन करा देते हैं। सजी-संवरी दु न झरोखे के पीछे छिप कर यदि अपने होने वाले पति की एक झलक पानी को उतावली रहती है तो कोई विरहणी अपना नजर बिछाए झरोखे पर ही आठों पहर टिकी रहती है। मां अपने बेटे की आगमन का इंतजार झरोखे पर टिक कर करती है। झरोखे तो तरह-तरह के होते हैं पर झरोखों के पीछे बैठ प्रती ा रत आँखों में सदा एक ही भाव होता है-कुछ देखने का, कुछ पाने का। यु भूमि में मोच पर डटा जवान भी तो खाई के झरोखे से बाहर छिप-छिप कर झांकता है- अपने श ु को गोली से उडा देने के लिए। झरोखे तो छोटे बड़े कई होते हैं पर उनके बाहर के श्य तो बहुत बड़े होते हैं जो कभी-कभी आ ा तक को झकझोर देते हैं।

. सावन की पहली झड़ी

पिछले कई दिनों से हवा में घुटन-सी ब गई थी। बाहर तपता सूर्य और सब तरफ हवा में नमी की अ कता जीवन दूभर बना रही थी। बार-बार मन में भाव उठता कि हे भगवान, कुछ तो दया करो। न दिन में चैन और न रात को आंखों में नींद- बस गर्मी ही गर्मी, पसीना ही पसीना। रात को बिस्तर पर करवटें लेते-लेते पता नहीं कब आँख लग गई। सुबह आँखें खुली तो अहसास हुआ कि खड़कियों से ठंडी हवा भीतर आ रही है। उठ कर खड़की से बाहर झांका तो मन खुशी से झूम उठा। आकाश तो काले बादलों से भरा हुआ था। आकाश में कहीं नीले रंग की झलक नहीं। सूर्य देवता बादलों के पीछे पता नहीं कहाँ छिपे हुए थे। प ी पेड़ों पर बादलों के स्वागत में चहचहा रहे थे। मुह े से सारे लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकल म सम के बदलते रंग को देख रहे थे। उमड़ते-उमड़ते मस्त हा थयों से काले-कजरारे बादल मन में मस्ती भर रहे थे। अचानक बादलों में तेज बिजली क ं ी जोर से बादल गरजे और मोटी-मोटी कुछ बूँदें टपकीं कुछ लोग इ र-उ र भागे ताकि अपने-अपने घरों में बाहर पड़ा सामान भीतर रख लें। पल भर में ही बा रश का तेज़ सर्राटा आया और फिर लगातार तेज़ बा रश शु हो गई। महीनों से प्यासी रती की प्यास बुझ गई । पेड़-प ों के पत्ते नहा गए।

उनका ूल- ूस रत चेहरा ुल गया और हरी-भरी दमक फिर से ल ट आई। छोटे-छोटे ब े बा रश में नहा रहे थे, खेल रहे थे, एक-दूसरे पर पानी उछाल रहे थे। कुछ ही देर में सड़कें-गलियां छोटे-छोटे नालों की तरह पानी भर-भर कर बहने लगी थीं। कल रात तक दहकने वाला दिन आज खुशनुमा हो गया था। तीन-चार घंटे बाद बा रश की गति कुछ कम हुई और फिर पाँच-दस मिनट के लिए बा रश क गई। लोग बाहर निकलें पर इससे पहले फिर से बा रश की शु हो गई-कभी ीमी तो कभी तेज़। सुबह से शाम हो गई है पर बादलों का अं ेरा उतना ही है जितना सुबह था। रम झम बा रश आ रही है। घरों की छतों से पानी पनालों से बह रहा है। मेरी दादी अभी कह रही थी कि आज शनिवार को बा रश की झड़ी लगी है। यह तो अगले शनिवार तक ऐसे ही रहेगी भगवान करे ऐसा ही हो। रती की प्यास बुझ जाए और हमारे खेत लहलहा उठे।

. इ हान के दिन

बड़े-बड़े भी कांपते हैं इ हान के नाम से। इ हान छोटों का हो या बड़ों का, पर यह डराता सभी को है। पिछले वर्ष जब दसवीं की बोर्ड परी ा हमें देनी थी तब सारा वर्ष ूल में हमें बोर्ड परी ा नाम से डराया गया था और घर में भी इसी नाम से मकाया जाता था। मन ही मन हम इसके नाम से भी डरा करते थे कि पता नहीं इस बार इ हान में क्या होगा। सारा वर्ष अ तरह प ाई की थी, बार-बार टैस्ट दे-दे कर तैयारी की थी पर इ हान के नाम से भी डर लगता था। जिस दिन इ हान का दिन था, उससे पहली रात मुझे तो बि ुल नींद नहीं आई। पहला पेपर हिंदी का था और विषय पर मेरी अ पकड़ थी पर 'इ हान' का भूत सर पर इस प्रकार सवार था कि नीचे उतरने का नाम ही नहीं लेता था। सुबह ूल जाने के लिए तैयार हुआ। ूल बस में सवार हुआ तो हर रोज़ हो ह ा करने वाले सा थयों के हाथों में पकड़ी पुस्तकें और उनकी झुकी हुई आँखों ने मुझे और अ क डराया। सब के चेहरों पर ख फ-सा छाया था। खल खलाने वाले चेहरे आज सहमे हुए थे। मैंने भी मन ही मन अपने पाठों को दोहराना चाहा पर मझे तो कुछ याद ही नहीं। सब कुछ भूलता-सा प्रतीत हो रहा था। मैंने भी अपनी पुस्तक खोली। पुस्तक देखते ही ऐसाा लग कि मुझे तो यह आती है।

खैर, ूल पहुंचकर अपनी जगह पर बैठे। प्रश्न-प मिला, आसान लगा। ठीक समय पर पूरा प हो गया। जब बाहर निकले तो सभी प्रसन्न थे पर साथ ही चिंता आरंभ हो गई अगले पेपर की। अगला पेपर गणित का था। चाहे दो छु यां थीं, पर ऐसा लगता था कि ये तो बहुत कम हैं। वह पेपर भी बीता पर चिंता समाप्त नहीं हुई। पं ह दिन में सभी पेपर हुए पर ये सारे दिन बहुत व्यस्त रखने वाले थे इन दिनों न तो भूख लगती थी और न खेलने की इ ा होती थी। इन दिनों न तो मैं अपने किसी मि के घर गया और न ही मेरे किसी मि को मेरी सु आई। इ हान के दिन बड़े तनाव भरे थे।

4. दिया और तूफ़ान

मि ी का बना हुआ एक नन्हा-सा दीया भी जलता है तो रा अं कार से लड़ता हुआ उसे दूर भगा देता है। अपने आस-पास ह ा-सा उजाला फैला देता है। जिस अ कार में हाथ को हाथ नहीं सूझता उसे भी मंद प्रकाश फैला कर काम करने यो रास्ता दिखा देता है। हवा का हलका-सा झोंका जब दीये की ल को कंपा देता है तब ऐसा लगता है कि इसके बुझते ही अं कार फिर छा जाएगा और फिर हमें उजाला कैसे मिलेगा ? दीया चाहे छोटा-सा होता है पर वह अकेला अं कार के संसार का सामना कर सकता है तो हम इस इनसान जीवन की राह में आने वाली कठिनाइयों का भी उसी की तरह मुकाबला क्यों नहीं कर सकते ? यदि वह तूफ़ान का सामना करके अपनी टिमटिमाती ल से प्रकाश फैला सकता है तो हम भी हर कठिनाई में कर्मठ बन कर संकटों के घेरों से निकल सकते हैं। महाराणा प्रताप ने सब कुछ खो कर अपना ल प्राप्त करने की ठानी थी। हमारे पूर्व प्र ानमं ी लाल बहादुर शा ी ने नन्हें-से दीये के समान जीवन की कठोरता का सामना किया था और वि के सबसे बड़े गणतं भारत का प्र ानमं ी पद प्राप्त कर लिया था। हमारे रा पति कलाम ने अपना जीवन टिमटिमाते दीये के समान आरंभ किया था पर आज वही दीया हमारे देश को मिसाइलें प्रदान करने वाला प्रचंड अ पुंज है। उसने देश को जो शक्त प्रदान की है वह स्तु य है। समु में एक छोटी-सी न का ँची-तूफानी लहरों से टकराती हुई अपना रास्ता बना लेती है और अपनी मंज़िल पा लेती है।

एक छोटा-सा प्रवासी प ी साइबे रया से उड़ कर हज़ारों-लाखों मील दूर पहुँच सकता है तो हम इंसान भी कठिन से कठिन मंज़िल प्राप्त कर सकते हैं। अकेले अभिमन्यु ने च व्यूह में घर कर क रवों जैसे महार थयों का डट कर सामना किया था। कभी-कभी तूफान अपने प्रचंड वेग से दीये की ल को बुझा देता है पर जब तक दीया जगमगाता है तब तक तो अपना प्रकाश फैलाता है और अपने अस्ति व को प्रकट करता है। मिटना तो सभी को है एक दिन। वह कठिनाइयों से डरकर छिपा रहे या डट कर उनका मुकाबला करे। ` मनु वही है जो दीये के समान जगमगाता हुआ तफ़ानों की परवाह न करे और अपनी रोशनी से संसार को उजाला प्रदान करता रहे।

. मेरे मुह ` का च राहा

मुह ` की सारी गतिवि यों का कें मेरे घर के पास का च राहा है। नगर की चार प्रमुख सड़के इस आर-पार से गुज़रती हैं इसलिए इस पर हर समय हलचल बनी रहती है। पूर्व से प ि म की ओर जाने वाली सड़क रेलवे स्टेशन की ओर से आती है और मु य बाज़ार की तरफ़ जाती है जिसके आगे औदयोगिक ` हैं। रेलवे स्टेशन से आने वाले या ी और मालगाड़ियों से उतरा सामान टकों में भर इसी से गुज़रकर अपने- अपने गंतव्य पर पहुँचता है। उत्तर से द ण की तरफ जाने वाली सड़क मॉडल टा न और बस स्टैंड से गुज़रती है। इस पर दो सनेमा हॉल तथा अनेक व्यापा रक प्रति ान बने हैं जहाँ लोगों का आना-जाना लगा रहता है। च राहे पर फलों की रेहड़ियां, कुछ स जी बेचने वाले, खोमचे वाले तो सारा दिन जमे ही रहते हैं। चूंकि च राहे के आसपास घनी बस्ती है इसलिए लोगों की भीड़ कुछ न कुछ खरीदने के लिए यहाँ आती ही रहती है। सुबह-सवेरे ूल जाने वाले ब ों से भरी र ा और बसें जब गुज़रती हैं तो भीड़ कुछ अ क ब जाती है। कुछ र ाओं में तो नन्हें-नन्हें ब ` गला फाड़ कर चीखते चि ाते सब का ान अपनी ओर खींचते हैं। वे ूल नहीं जाना चाहते पर जाने के लिए विवश कर र ा में बिठाए जाते हैं। च राहे पर लगभग हर समय कुछ आवारा मजनू छाप भी मंडराते रहते हैं जिन्हें ताक-झांक करते हुए पता नहीं क्या मिलता है।

मैंने कई बार पुलिस के ारा उनकी वहाँ की जाने वाली पिटाई भी देखी है पर इसका उन पर कोई विशेष असर नहीं होता। वे तो चिकने घड़े हैं। कुछ तो दिन भर नीम के पेड़ के नीचे घास पर बैठ ताश खेलते रहते हैं। मेरे मुह ा का च राहा नगर में इतना प्र स है कि मुह ा और आस-पास की कॉलोनियों की पहचान इसी से है।

. मेरा प्रय टाइम-पास

आज के आपा ापी से भरे युग में किसके पास फ़ालतू समय है पर फिर भी हम लोग मशीनी मानव तो नहीं हैं। कभी-कभी अपने लिए नि ार्रत काम ं ों के अति रक्त हम कुछ और भी करना चाहते हैं। इससे मन सुकून प्राप्त करता है और लगातार काम करने से उ न्न बो रयत दूर होती है। हर व्यक्ति की पसंद अलग होती है इसलिए उनका टाइम पास काा तरीका अलग होता है। किसी का टाइम पास सोना है तो किसी का टीवी देखना,तो किसी का सनेमा देखना तो किसी का उपन्यास प ना, किसी का इ र-उ र घूमना तो किसी का खेती-बाड़ी करना। मेरा प्रय टाइम पास विंडो-शॉपिंग है। जब कभी काम करते-करते मैं ब जाता हैं और मन कोई काम नहीं करना चाहता तब मैं तैयार हो कर घर से बाहर बाजार की ओर निकल जाता है-विंडो-शापिंग के लिए। जिस नगर में मैं रहता ँ वह काफी बड़ा है। बड़े-बड़े बाजार, शॉपिंग मॉ और डिपार्टमेंटल स्टोर की सं या काफी बड़ी है दुकानों की शो-विंडोज सुंदर ं ग से सजे-संवरे सामान से ाहकों को लुभाने के लिए भरे रहते हैं। नए-नए उ ाद, सुंदर कपड़े, इले ॉनिक नया सामान, तरह-तरह के खल ने, सजावटी सामान आदि इनमें भरे रहते हैं। मैं इन सजी-संवरी दुकानों की शो-विंडोज को ान से देखता ँ, मन ही मन खुश होता है, उनकी संदरता और उपयोगिता की सराहना करता ँ।जिस वस्तु को मैं खरीदने की इ ा करता ँ उसके दाम का टैग देखता ँ और मन में सोच लेता ँ कि मैं इसे तब खरीद लूगा जब मेरे पास अति रक्त पैसे होंगे। ऐसा करने से मेरी जानकारी ब ती है। नए-नए उ ादों से संबं त ान ब ता है और मन नए सामान को लेने की तैयारी करता है और इसलिए मस्ति और अ क प र म करने के लिए तैयार होता है। टाइम-पास की मेरी यह वि उपयोगी है, सार्थक है, प र म करने की प्रेरणा देती है, ान ब ाती है और किसी का कोई नुकसान नहीं करती।

. एक कामकाजी औरत की शाम

हमारे देश में म वर्गीय प रवारों के लिए अति आवश्यक हो चुका है कि घर प रवार को ठीक प्रकार से चलाने के लिए पति-प नी दोनों न कमाने के लिए काम करें और इसीलिए समाज में कामकाजी औरतों की सं या निरंतर ब ती जा रही है। कामकाजी औरत की जिंदगी पु षों की अपे ा कठिन है। वह घर-बाहर एक साथ संभालती है। उसकी शाम तभी आरंभ हो जाती है जब वह अपने कार्य ल से छु ी के बाद बाहर निकलती है वह घर पहुंचने से पहले ही रास्ते में आने वाली रेहड़ी या बाजार से फल-स जियां खरीदती है, छोटा-मोटा किरयाने का सामान लेती है और लदी-फदी घर पहुँचती है। तब तक पति और ब े भी घर पहुँच चुके होते हैं। दिन भर की थकी-हारी औरत कुछ आराम करना चाहती है पर उससे पहले चाय तैयार करती है। यदि वह औरत संयुक्त प रवार में रहती है तो कुछ और तैयार करने की फ़रमाइशें भी उसे पूरी करनी पड़ती है। चाय पीते-पीते वह ब ों से, बड़ों से बातचीत करती है। यदि उस समय कोई घर में मिलने-जुलने वाला आ जाता है तो सारी शाम आगंतुकों की सेवा में बीत जाती है। लेकिन यदि ऐसा नहीं हआ तो भी उसे फिर से बाज़ार या कहीं और जाना पड़ता है ताकि घर के लोगों की फ़रमाइशों को पूरा कर सके। ल ट कर ब ों को होमवर्क करने में सहायता देती है और फिर रात के खाने की तैयारी में लग जाती है। कभी कभी उसे आस-पड़ोस के घरों में भी औपचा रकता वश जाना पडता है। कामकाजी औरत तो चक्कर घन्नी की तरह हर पल चक्कर ही काटती रहती है। उसकी शाम अ कतर दूसरों की फ़रमाइशों को पूरा करने में बीत जाती है। वह हर पल चाहती है कि उसे भी घर में रहने वाली औरतों के समान कोई शाम अपने लिए मिले पर प्राय ऐसा हो नहीं पाता क्योंकि कामकाजी औरत का जीवन तो घड़ी की सुइयों से बं ा होता है।

प्रश्न . घर से ूल तक के सफ़र में आज आपने क्या-क्या देखा और अनुभव किया ? लिखें और अपने लेख को एक अ ा-सा शीर्षक भी दें।

उत्तर संवेदनाओं की म त

मैं घर से अपने विद्यालय जाने के लिए निकली। आज मैं अकेली ही जा रही थी क्योंकि मेरी सखी नीलम को ज्वर आ गया था। मेरा विद्यालय मेरे घर से लगभग तीन किलोमीटर दूर है। रास्ते में बस स्टेंड भी पड़ता है। वहाँ से निकली तो बसों का आना-जाना जारी था। मैं बचते-बचाते निकल ही रही थी कि मेरे सामने ही एक बस से टकरा कर एक व्यक्ति बीच सड़क पर गिर गया। मैं किनारे पर खड़ी होकर देख रही थी कि उस गिरे हुए व्यक्ति को उठाने कोई नहीं आ रहा। मैं साहस करके आगे जा ही रही थी कि एक बुजुर्ग ने मुझे रोक कर कहा, 'बेटी ! कहाँ जा रही हो?' वह तो मर गया लगता है। हाथ लगाओगी तो पुलिस के चक्कर में पड़ जाओगी। मैं घबरा कर पीछे हट गई और सोचते-सोचते विद्यालय पहुंच गई कि हमें क्या हो गया है जो हम किसी के प्रति हमदर्दी भी नहीं दिखा सकते, किसी की सहायता भी नहीं कर सकते?

प्रश्न 4. अपने आस-पास की किसी ऐसी चीज़ पर एक लेख लिखें, जो आप को किसी वजह से वर्णनीय प्रतीत होती हो। वह कोई चाय की दुकान हो सकती है, कोई सैलून हो सकता है, कोई खोमचे वाला हो सकता है या किसी खास दिन पर लगने वाला हॉट-बाज़ार हो सकता है। विषय का सही अंदाज़ा देने वाला शीर्षक अवश्य दें।

CCL CLass

उत्तर- पानी के नाम पर बिकता ज़हर

जेठ की तपती दोपहरी। पसीना, उमस और चिपचिपाहट ने लोगों को व्याकुल कर दिया था। गला प्यास से सूखता है तो मन सड़क के किनारे खड़ी 'रेफ्रिजरेटर कोल्ड वाटर' की रेहड़ी की ओर चलने को कहता है। प्यास की तलब में पैसे दिए और पानी पिया। चल दिए। पर कभी सोचा नहीं कि इन रेहड़ी की टंकियों की क्या दशा है ? क्या इन्हें कभी साफ़ भी किया जाता है ? क्या इन में वास्तव में रेफ्रीजेरेटर कोल्ड वॉटर है या पानी में बर्फ डाली हुई है ? कही हम पैसे देकर पानी के नाम पर ज़हर तो नहीं पी रहे? इन कोल्ड वाटर बेचने वालों के 'वाटर' की जांच स्वास्थ्य विभाग का कार्य है परंतु वे तो तब तक नहीं जागते हैं जब तक इनके दूषित पानी पीने से सैंकडों व्यक्ति दस्त के, हैजे के शिकार नहीं हो जाते।

आशा है इन गर्मियों में स्वास्थ्य विभाग जायेगा और पानी के नाम पर ज़हर बेचने वाली इन काल्ड वाटर की रेहड़ियों की जाँच करेगा।

Share This PDF With Friends and Help Them

CCL CLass